डॉ० [illegible] कुमार
हिंदी
[illegible] कॉ०, महनार

पर उनका अनुगमन करते हैं। पंत जी को भाषा और शब्द के मर्म और आत्मा का पूरा ज्ञान है। एक ही शब्द के पर्यायवाची शब्द आकर भिन्न भिन्न अर्थ का द्योतन करते हैं। भाषा एवं शब्द शिल्पी की दृष्टि से पंत जी की समता नहीं मिलेगी। वे कर्ण कटु और अनगढ़ शब्दों को भी अपने कोमल कल्पना से मधुर बना देते हैं। पंत जी ने शब्दावली को सुकुमारता के आवरण में प्रस्तुत किया है इससे भाव की रसधारा प्रवाहित हो उठती है। पदावली को सुकुमार बनाने के लिए पंत जी ने कहीं कहीं ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। इससे काव्य और संगीत की मधुर धारा प्रवाहित हो उठी। 'धीरे' शब्द का प्रयोग अपने आप में कोमलता का सृष्टि करता है —

" नवल कलियों के धीरे झुक, प्रसूनों के अधरों को चूम।
मुदित कवि-सी तुम अपना पाठ सीखती हो सखी जग में घूम॥"

'काजर कारे', 'बादर', 'बहादुर' शब्द स्वर एक में मधुरता एवं चित्र राग की सृष्टि करते हैं —

" धूम धुँआरे काजर कारे, हम ही बिकरारे बादर,
मदन राज के बीर बहादुर, पावस के उड़ते फनी धर।"

पंत जी के काव्य में छन्दों का प्रयोग भावानुकूल है। वह भाव और वस्तु-वर्णन में कोमलता और सौन्दर्य प्रदान करता है। पंत के छन्दों में गति का उत्थान-पतन, शब्दों का मधुर-स्पंदन, राग-ध्वनि के मादक रुनझुन और संगीत का अनुकरण देखते ही बनता है। छंदों में झरनों का कलरव और वर्षा की रिमझिम बूँदों का संगीत भरा हुआ है। पंत जी ने अपने छंदों को सुकुमार बनाने का अथक प्रयास किया है। इस सम्बन्ध में उन्होंने स्वयं भी कहा है —

" छन्दों को अपने उँगलियों पर नचाने से पूर्व कवि को छंदों के संकेतों पर नाचना पड़ता है। सर्कस के नवीन अदम्य अश्वों की तरह उन्हें साधना, उनके साथ साथ घूमना, दौड़ना, चक्कर खाना पड़ता है, तब कहीं वे स्वेच्छानुसार इंगित मात्र पर वर्तुलाकार, अंडाकार, आयताकार नचाये जा सकते हैं। जिस प्रकार सा रे ग म आदि स्वर एक होने पर भी पृथक-पृथक वाद्य-यंत्रों में उनकी पृथक-पृथक रीति से साधना करनी पड़ती है, उसी प्रकार भिन्न-भिन्न छं के तारों, पदों तथा तंतुओं से भावनाओं का राग जाग्रत करने से पूर्व भिन्